16 मार्च, 2018

Indian Council of World Affairs
Sapru House, Barakhamba Road
New Delhi

रिपोर्ट

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

‘21वीं शताब्दी में भारत-नेपाल सम्बन्ध: चुनौतियाँ एवं विकल्प’

विश्व मामलों की भारतीय परिषद् के सहयोग से
बापू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर

में आयोजित

2-3 फरवरी 2018
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

यह हमारे महाविद्यालय के लिए सौभाग्य का विषय था कि विश्व मामलों की भारतीय परिषद के सहयोग से रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग द्वारा दिनांक 2–3 फरवरी 2018 को **''21वीं शताब्दी के भारत–नेपाल सम्बन्ध : चुनौतियाँ एवं विकल्प''** पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के सभागार में आमंत्रित अतिथियों को मंच पर आसीन कराया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रो0 अवधेश प्रताप शुक्ल, पूर्व विभागाध्यक्ष एवं आचार्य, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर द्वारा की गयी। मुख्य वक्ता के रूप में ग्रुप कैप्टन शरद तिवारी, नई दिल्ली से पधारे। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो0 प्रदीप कुमार यादव व प्रो0 श्रीनिवास मणि त्रिपाठी, आचार्यगण–रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर। विश्व मामले की भारतीय परिषद के प्रतिनिधि डॉ0 राकेश कुमार मीना, महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 एस0पी0एल0 श्रीवास्तव, संगोष्ठी के संयोजक/आयोजन सचिव डॉ0 करूणेन्द्र सिंह व सह–आयोजन सचिव डॉ0 प्रमोद कुमार मंच पर उपस्थित रहे। संचालन डॉ0 प्रेमलता, मनोविज्ञान विभाग द्वारा किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन कर किया गया। तत्पश्चात् आगन्तुक अतिथियों का कार्यक्रम संयोजक डॉ0 करूणेन्द्र सिंह द्वारा परिचय कराया गया। मंचासीन अतिथियों का सम्मान शाल व सम्मान–पत्र प्रदान कर किया गया।

संगोष्ठी का औपचारिक शुभारम्भ डॉ0 करूणेन्द्र सिंह द्वारा विषय प्रर्वतन कर किया गया। इसके बाद मुख्य वक्ता के रूप में पधारे ग्रुप कैप्टन शरद तिवारी ने अपने अभिभाषण को प्रारम्भ करते हुए कहा कि नेपाल भौगोलिक रूप से छोटा राष्ट्र है लेकिन भारत के लिए काफी महत्वपूर्ण है। नेपाल तीनों तरफ से भारत से घिरा हुआ और एक तरफ से तिब्बत (चीन) से घिरा हुआ है। भारत और नेपाल के सम्बन्ध बहुत विशिष्ट और पुराने है तथा भारत–नेपाल की मद्द के लिए हमेशा तैयार रहता है। वर्ष 2015 में नेपाल में आये भूकम्प में भारत ने आगे बढ़कर सहायता की। भारत ने तुरन्त 6 घण्टे के भीतर आपदा सहायता नेपाल पहुँचाई। इसके अतिरिक्त दवाई खाद्यान्न भी पहुँचाई, भूकम्प आपदा राहत कार्य के लिए भारत ने नेपाल को 1 बिलियन डॉलर की सहायता भी दी। भारत का नेपाल में प्रत्यक्ष निवेश हाल ही के वर्षों में बढ़ा है जो कि अस्सी फीसदी तक हो गया है। नेपाल से भारत में लगभग 250 नदियाँ बहकर आती हैं और इनमें सिंचाई तथा पनबिजली की अपार संभावनाएँ है लेकिन सही प्रकार से योजनायें नहीं बन पा रही है। भारत हमेशा नेपाल को वित्तीय और तकनीकी सहायता देता रहा है लेकिन वर्ष 2015 से इसमें कमी आई है। हाल ही में अमेरिका, यूके, जापान आदि देशों की सहायता नेपाल में बढ़ी है। यदि सेना की बात करें तो अभी भारतीय सेना में 32000 गोरखा सैनिक हैं। भारतीय सेना द्वारा रिटायर्ड गोरखा सैनिकों को 1975 करोड़ राशि पेंशन के रूप में दी है। दोनों देशों के मध्य अभी कुछ चुनौतियाँ भी उभर कर सामने आई हैं, जिसमें मुख्यतः नेपाल में बढ़ते भारत विरोधी सुर है। क्योंकि वहाँ के दलों ने इसे चुनाव में कई बार मुख्य मुद्दा बनाया है। तराई के क्षेत्र में मधेशियों के साथ भेदभाव एक मुद्दा है जिसके कारण देश में अस्थिरता बढ़ी है। तराई क्षेत्र में हाल ही मदरसों की संख्या बढ़ी है जिससे यह पता चलता है कि खुली सीमा अब पहले जैसी नहीं रही, इसीलिए भारत में अब एक वर्ग यह कहने लगा है कि इस सीमा को सील कर देना चाहिए। अभी हाल ही के चुनावों में निश्चित रूप से चीन की भूमिका बढ़ी है जिसके चलते नेपाल में वामपंथी दल जीते है। चीन द्वारा नेपाल को दी जा रही आर्थिक सहायता एक छलावा है जिसका वह आगे भविष्य में दुरूपयोग कर सकता है।

प्रो0 प्रदीप कुमार यादव ने दोनों देशों के सम्बन्धों की रूपरेखा का वर्णन करते हुए कहा कि नेपाल और भारत के सम्बन्ध रोटी–बेटी के सम्बन्ध रहे है। लेकिन हाल ही के दौर में इनमें बदलाव आये है। भारत और नेपाल के सम्बन्धों का आधार 1950 की सन्धि रही है जिसमें नेपाल के विकास की प्रमुख रूप से प्राथमिकता दी गयी है। वैसे दोनों देशों के मध्य कड़वाहट की शुरूआत माओवादी समूहों ने ही की है। ये समूह हमेशा से गोरखपुर और बनारस को नेपाल का हिस्सा बताते रहे है जब से नेपाल में साम्यवादी ताकतों को बल मिलने लगा है नेपाल का झुकाव चीन की तरफ बढ़ने लगा है। नेपाल में आये भूकम्प के बाद भारत ने हालाँकि काफी मद्द की लेकिन फिर भी नेपाल का झुकाव चीन की तरफ बढ़ा, इसके पीछे सम्भवतः भारत की भी कुछ कमियाँ रही है। इसमें भारत की मुख्य कमी रही कि नेपाल को नीचे समझना, बराबरी का दर्जा न देना जबकि वहीं चीन, नेपाल से बराबरी का व्यवहार करता है। अभी हाल ही में चीन द्वारा नेपाल को इण्टरनेट की सुविधा मुहैया करने से भी नेपाल चीन की प्रगाढ़ता बढ़ी है।

प्रो0 एस0एन0एम0 त्रिपाठी ने भारत–नेपाल सम्बन्धों पर बोलते हुए कहा कि इन दोनों देशों के सम्बन्ध क्षेत्र में अनूठे और विशिष्ट है लेकिन ये कभी भूटान की तरह एक मॉडल स्थापित नहीं कर पाए। हालाँकि 1950 की संधि दोनों देशों के सम्बन्धों को मजबूत करती है, पर कुछ नेपालियों का मानना है कि उनके हितों की अनदेखी की गयी है। यद्यपि कुछ समय से नेपाल में चीन का निवेश और प्रभाव बढ़ा है लेकिन भारत और नेपाल के रिश्ते एक दूसरे की आवश्यकता भी है और मजबूरी भी है। दोनों देशों के रिश्तों में उतार चढ़ाव पर उन्होंने कहा कि अविश्वास का बढ़ना सम्बन्धों में दरार लाता है। पिछले कुछ समय में नेपाल में कुछ तथाकथित राष्ट्रवादी भारत विरोधी बयान देते रहे है और मधेश समस्या भी इस दौरान एक प्रमुख कारक रही है। 1950 की शांति और मैत्री संधि से दोनों देशों के सम्बन्ध प्रगाढ़ हुए और इससे नेपाल को आर्थिक सहायता में सहूलियत भी मिलने लगी परन्तु नेपाल द्वारा बार–बार चीन का कार्ड इस्तेमाल करने से सम्बन्धों में अन्तर आया है। दोनों देशों को कुछ साझी

रणनीति बनाकर उससे लड़ना चाहिए, जैसे आतंकवाद, तस्करी, जाली नोट, मानव तस्करी आदि। अभी विदेश मंत्री सुषमा स्वराज नेपाल जा रही है जिससे दोनों देशों के मध्य संवादों के जरिये रिश्तों में मजबूती आने की पूरी सम्भावना है।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में प्रो0 ए0पी0 शुक्ल ने विदेश नीति और भारत–नेपाल सम्बन्धों पर अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि हमें इस दिशा में सोचना चाहिए कि भारत दक्षिण एशिया और अन्य बाहरी देशों के साथ कैसे विदेश नीति का निर्धारण करे। इसके लिए राष्ट्रीय हित का संवर्द्धन सर्वोपरि होना चाहिए। उन्होंने कहा कि विदेश नीति के मामले में सत्तारूढ़ सरकार का हित पोषित होने के बजाय देश के हितों का पोषण जरूरी है। उन्होंने सीमा पर व्यवस्थित प्रबन्धन करने की बात कही, सीमा का प्रबन्धन आवश्यक है जिससे दोनों देशों के हित सुरक्षित रहे। इससे सीमा पर होने वाली अवैध आवाजाही पर भी रोक लगेगी। पाकिस्तान जैसे देशों से सीमापार आने वाले आतंकवाद पर भी इससे लगाम कसी जा सकती है। नेपाल दो बड़े देशों के बीच अवस्थित है और उसके सामने यह बड़ी समस्या रहती है किसके साथ अधिक नजदीकियाँ बढ़ाई जाये। भारत नेपाल सम्बन्धों पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इन दोनों देशों के मध्य एक बड़ी चुनौती चीन है जो कि हाल ही के वर्षों में ज्यादा बढ़ी है। अभी हाल के दौर में दोनों देशों के लिए यह जरूरी है कैसे भारत विरोधी तत्वों से लड़ा जाये। जिसमें सीमा पार जाली मुद्रा और तस्करी को रोकना अति आवश्यक है। मधेश की समस्या नेपाल के नए संविधान से जुड़ी हुई है और यह भारत को भी प्रभावित कर रही है। नेपाल में निरन्तर चल रही राजनीतिक अस्थिरता ने भी दोनों देशों के सम्बन्धों पर असर डाला है।

आयोजन के सह–सचिव डॉ0 प्रमोद कुमार द्वारा सभी के प्रति आभार प्रगट किया गया।

अपराह्न में तकनीकी सत्रों का आयोजन हुआ जिसमें प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ0 बलवान सिंह विभागाध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, महाविद्यालय भटवली बाजार (उनवल), गोरखपुर ने की सह अध्यक्ष के रूप में डॉ0 अशोक कुमार गुप्ता, असिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय रतसड़ बलिया उपस्थित रहे। तकनीकी सत्र में दो आमंत्रित वक्ता द्वारा अपने विचार रखे गये। प्रथम वक्ता के रूप में डॉ0 राकेश कुमार मीना, अनुसंधान अध्येता, विश्व मामलों की भारतीय परिषद ने विचार प्रस्तुत किये उन्होंने कहा कि वर्तमान में भारत–नेपाल सम्बन्धों पर अपने विचार तथा परिषद् के कार्य और लक्ष्यों के बारे में भी बताया। डॉ0 मीना ने नेपाल में विगत वर्ष में नये संविधान की घोषणा के बाद भारत और नेपाल के मध्य सम्बन्धों में कैसे उतार चढ़ाव आये इसका वर्णन किया। डॉ0 मीना ने नेपाल द्वारा चीन और भारत के साथ व्यापार की व्यवहारिकता पर भी अपनी राय रखी और कहा कि भौगोलिक परिस्थितियाँ चीन नहीं भारत के साथ व्यापार के अनुकूल है। अपनी बात कहते हुए डॉ0 मीना ने गोरखपुर की भौगोलिक अवस्थिति को काफी महत्वपूर्ण बताया और कहा कि यह दोनों देशों के मध्य एक गेटवे है जहाँ भारत नेपाल अध्ययन केन्द्र की स्थापना की जा सकती है। जहाँ दोनों देशों के शोधार्थी और प्रबुद्धजन शोध और अध्ययन का कार्य कर सकते है। विश्व मामलों की भारतीय परिषद के एक थिंक टैंक के रूप में भारतीय बुद्धिजीवियों के एक समूह द्वारा 1943 में स्थापित किया गया था। यह सोसायटी अधिनियम 1860 के पंजीकरण के अन्तर्गत एक गैर–सरकारी, गैर–राजनीतिक और गैर–लाभकारी संगठन के रूप में पंजीकृत किया गया था। 2001 में संसद के एक अधिनियम द्वारा विश्व मामलों की भारतीय परिषद राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया गया है। भारत के उपराष्ट्रपति आईसीडब्ल्यूए के पदेन अध्यक्ष हैं। परिषद् के मुख्य लक्ष्य हैं–अन्य देशों के साथ भारत के सम्बन्धों को बढ़ावा देने के लिए अध्ययन, अनुसंधान, विचार विमर्श, व्याख्यान, विनिमय के माध्यम से अन्य संगठनों के साथ विचार और जानकारी की भीतर और बाहर भारत इसी तरह की गतिविधियों में लगे हुए हैं। सम्मेलनों और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के प्रति भारतीय नीति पर चर्चा करने और अध्ययन करने के लिए सेमिनारों की व्यवस्था करें। उन्होंने विदेश नीति पर हिन्दी में विचार विमर्श करने के विदेश मंत्रालय के कदम की महत्वता को स्पष्ट किया। विदेश नीति पर हिन्दी में वाद–विवाद, शोध, लेख, पुस्तक, सेमिनार आदि को परिषद् द्वारा प्रोत्साहित करने की बात कही।

दूसरे वक्ता के रूप में डॉ0 नवीन कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन राजकीय महाविद्यालय आदयपुर हिसार (हरियाणा) रहे। उन्होंने कहा कि भारत–नेपाल का सम्बन्ध आदिकाल से चला आ रहा है जिसमें किसी की भी विवशता नहीं है यह उनका अपनापन है जिसके आधार पर यह सम्बन्ध आज भी पूर्व की भांति ही जीवन्त हैं। इसके अलावा डॉ0 अमित कुमार मिश्र, असिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, हीरालाल पी0जी0 कालेज खलीलाबाद, संतकबीरनगर, डॉ0 जितेन्द्र कुमार, असस्टिेंट प्रोफेसर रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, मोहम्मद हसन पी0जी0 कालेज, जौनपुर ने भी अपना शोध–पत्र प्रस्तुत किया।

द्वितीय तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ0 के0एन0 पाण्डेय, अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, लाल बहादुर शास्त्री पी0जी0 कालेज गोण्डा ने तथा सह अध्यक्ष के रूप में डॉ0 अतुल चन्द, एसोसिएट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बलुआकोट, धारचुला, पिथौरागढ़ (उत्तराखण्ड) उपस्थित रहे। इस सत्र में भी दो आमंत्रित शोध–पत्र प्रस्तुत किये गये। प्रथम वक्ता के रूप में डॉ0 राम प्रसाद यादव, असिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दिग्विजयनाथ पी0जी0 कालेज, गोरखपुर ने अपने वक्तव्य में कहा कि नेपाल एक ऐसा पड़ोसी देश है जिसको हम अपना सबसे अभिन्न मित्र मानते है। नेपाल की जनसंख्या भारत के हर कदम पर सहयोग करती है जिसमें उनके गोरखा सैनिक महत्वपूर्ण रूप से शामिल हैं।

नेपाली राजनीति में शुरू से लेकर आज तक भारत की भूमिका के सन्दर्भ में अगर कहा जाय कि 'कुछ बात है कि हस्ती मिट्टी नहीं हमारी' तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। यह कटु सत्य है कि भले ही हम भारतीय राजदूत पर जूता उछालें या फिर वीरगंज के कन्सुलर को बदनाम करने की कोशिश कर, नेपाल की राजनीति में भारतीय वजूद को नकार नहीं सकते। अभी हाल ही में प्रकाशित श्याम शरण जी के लेख से कुछ बातें सामने आई हैं। पहली महत्वपूर्ण बात नेपाली सेना में नियुक्ति, पदोन्नति के सम्बन्ध में उन्होंने अपनी भूमिका को स्वीकार किया है। वास्तव में भारत–नेपाल सम्बन्ध में हमेशा नेपाल जैसे आर्थिक महत्व की बातों को तरजीह देता है–वैसे ही भारत सुरक्षात्मक बातों को। यही कारण है कि सेना और सुरक्षा के मामले में भारत चुप नहीं बैठ सकता। दूसरी घटना नेपाल के एक वरिष्ठ पत्रकार से जुड़ी है–जिसमें बिना सच्चाई जाने ही उसने भारत विरोधी समाचारों का सम्प्रेषण किया, जिसके लिए उसने बाद में माफी माँगी। वास्तविकता तो यही है कि हमारे यहाँ राष्ट्रीय हित पर व्यक्तिगत हित हाबी है। किसी भी देश की विदेश नीति राष्ट्रीय हित पर आधारित होती है।

द्वितीय वक्ता के रूप में डॉ0 पंकज कुमार वर्मा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, धर्म समाज महाविद्यालय अलीगढ़ उपस्थित रहे। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि नेपाल–भारत का ऐसा पड़ोसी राष्ट्र है जिसके साथ आपसी सुख–दुःख, रिश्ते–नाते, सामाजिक संस्कृति, धार्मिक, आर्थिक आदि तमाम तरह की परस्पर निर्भरताएँ हैं नेपाल भारत का ऐसा पड़ोसी राष्ट्र है जिसके साथ सीमा पर कोई रोक–टोक नहीं है। लगभग 1800 किमी0 लम्बी सीमा पर न तो कोई बाड़ है और न ही कोई अवरोध। सीमा को दर्शाने के लिए सिर्फ कंक्रीट के पीलर लगे हुए हैं। दोनों देशों की सीमाएँ एकदम से खुली हैं और दोनों देशों के नागरिकों के लिए आवागमन भी एकदम से खुला हुआ है। नेपाल पूरब, पश्चिम और दक्षिण में भारत से तथा उत्तर में तिब्बत–चीन से जुड़ा हुआ है। इसी सत्र में डॉ0 अनूप कुमार श्रीवास्तव, असिस्टेंट प्रोफेसर रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, महाविद्यालय भटवली बाजार (उनवल) गोरखपुर, डॉ0 आरती रानी असिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग डी0एन0पी0जी0 कालेज हिसार (हरियाणा) ने अपना शोध–पत्र प्रस्तुत किया।

दिनांक 3 फरवरी 2018 को तृतीय तकनीकी सत्र का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता डॉ0 शैलेन्द्र प्रताप सिंह, प्राचार्य, दिग्विजयनाथ पी0जी0 कालेज, गोरखपुर ने तथा सह अध्यक्ष डॉ0 दीर्घपाल सिंह भण्डारी, अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, राजकीय महाविद्यालय नई टिहरी (उत्तराखण्ड) ने की। इस सत्र में भी दो आमंत्रित व्याख्यान हुए जिसमें प्रथम वक्ता के रूप में डॉ0 राम तिवारी, असिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, वी0एस0एस0डी0 पी0जी0 कालेज, कानपुर ने कहा कि प्रमुख बुद्धिजीवियों का दृष्टिकोण है कि विश्व की शुरूआत 'घर' से होती है। व्यक्ति से परिवार, परिवार से पास–पड़ोस, पास–पड़ोस से समाज, समाज से राष्ट्र और राष्ट्र से विश्व के और सम्बन्धों का विस्तार होता है।

द्वितीय वक्ता के रूप में डॉ0 मनोज कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग हिन्दू कालेज मुरादाबाद ने कहा कि भारत नेपाल केवल पड़ोसी देश ही नहीं हैं इनका सदियों पुराना रिश्ता है जो इन्हें सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और धार्मिक रूप से जोड़ता है। नेपाल से भारत का रिश्ता रोटी और बेटी का समझा जाता है और प्राचीन काल से इस रिश्ते की परम्परा को दोनों राष्ट्रों ने निभाया है। भारत–नेपाल के बीच कोई सामरिक समझौता नहीं लेकिन अगर नेपाल पर कोई राष्ट्र आक्रमण करता है तो भारत उसे बर्दाश्त नहीं कर सकता है तथा किसी भी परिस्थिति में नेपाल की सहायता करने के लिए हमेशा तैयार रहता है। इस दौरान दर्जनों शोध पत्र पढ़े गये।

अपराह्न में समापन सत्र का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता प्रो0 हरिशरण, आचार्य एवं पूर्व अध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर ने की। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में डॉ0 महेन्द्र राम, पूर्व निदेशक, उच्च शिक्षा विभाग उ0प्र0, इलाहाबाद रहे।

समापन अभिषाण डॉ0 सुशील कुमार पाण्डेय, पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, संत तुलसीदास पी0जी0 कालेज कारीपुर, सुल्तानपुर तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो0 जे0एन0 पाण्डेय, पूर्व अध्यक्ष, भूगोल विभाग, दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर तथा प्रो0 हर्ष कुमार सिन्हा एवं डॉ0 विनोद कुमार सिंह, आचार्यगण, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर रहे। संचालन डॉ0 करूणेन्द्र सिंह संयोजक तथा आभार ज्ञापन प्राचार्य डॉ0 एस0पी0एल0 श्रीवास्तव ने किया।

कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो0 हरिशरण ने कहा कि 21वीं शताब्दी पूरे विश्व के लिए दूसरी महत्वपूर्ण शताब्दी है। यह एशिया की शताब्दी है इसमें एशियार्ड देशों का बोलबाला रहेगा। भारत–नेपाल सम्बन्ध पर कहा कि आर्थिक विकास पहली प्राथमिकता है। क्योंकि इस दौर में राजनीति को दूसरे स्थान पर रखा गया है। सारे बातचीत आर्थिक सहयोग के आधार पर आगे बढ़ता है भारत–नेपाल का सम्बन्ध सदियों पुराना है। सम्बन्धों को बनाए रखने के लिए आपसी बातचीत एवं आर्थिक सहयोग पर विकल्प करना होगा। अपनी नीति एवं राष्ट्रीय हित को अपने पक्ष में रखकर कार्य करना होगा।

मुख्य अतिथि डॉ0 महेन्द्र राम ने अपने सम्बोधन में कहा कि दोनों देशों की भौगोलिक स्थिति एवं संस्कृति स्थिति एक जैसी है। दोनों सांस्कृतिक धरोहर में कोई फर्क नहीं है। यह दोनों देशों को मजबूती से जोड़ता है जिससे इनके सम्बन्ध मजबूत हमेशा बने रहेंगे।

समापन अभिभाषण प्रस्तुत करते हुए डॉ0 सुशील कुमार पाण्डेय ने कहा कि उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड तथा बिहार के अधिकांश उत्तरी भागों से सटे हुए नेपाल से भारत का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक रिश्ता कितना पुराना और गहरा है कह पाना कठिन है। इन घनिष्ठ सम्बन्धों की प्राचीनता का प्रमाण आज भी भारत तथा नेपाल के मध्य आवागमन में कोई बाधा नहीं है। सीमावर्ती प्रदेशवासियों का तो रक्त सम्बन्ध विश्वविदित ही है। नेपाल के इतिहास पर एक विहंगम दृष्टि डालना उचित ही है जिसके अनुसार नेपाल–भारत की उत्तरी सीमा के अन्तर्गत पश्चिम में सतलज नदी से पूर्व में सिक्किम तक लगभग 500 मील फैला हुआ स्वतंत्र राज्य। इसकी राजधानी काठमांडू है। तीसरी शताब्दी ई0पू0 में यह भू–भाग अशोक के साम्राज्य का एक अंग था और चौथी शताब्दी ई0 में नेपाल राज्य सम्राट समुद्रगुप्त की सार्वभौम सत्ता स्वीकार करता था। सातवीं शताब्दी में इस पर तिब्बत का आधिपत्य हो गया। उपरांत इस देश में आन्तरिक संघर्षों के कारण अत्यधिक रक्तपात हुआ। ग्यारहवीं शताब्दी में नेपाल में ठाकुरीवंश के राजा राज्य करते थे। इसके बाद जब नेपाल में मल्लवंश, जिसका सबसे प्रसिद्ध शासक यक्षमल्ल (लगभग 1426 से 1475 ई0) था, राज्य कर रहा था। मिथिला के शासक नान्यदेव ने नेपाल पर अपनी नाममात्र की प्रभुता स्थापित कर ली यक्षमल ने मृत्यु के पूर्व ही राज्य का बँटवारा अपने पुत्रों और पुत्रियों में कर दिया था। इस विभाजन के फलस्वरूप नेपाल, काठमांडू तथा भातगाँव के दो परस्पर प्रतिद्वन्द्वी राज्यों में बंट गया।

इन आन्तरिक झगड़ों का लाभ उठाकर पश्चिमी हिमालय के प्रदेशों में बसने वाली गोरखा जाति ने 1768 ई0 में नेपाल पर अधिकार कर लिया। शनैः शनैः गोरखाओं ने अपनी सैनिक शक्ति में वृद्धि कर नेपाल को एक शक्तिशाली राज्य बना दिया। 19वीं शताब्दी में उन्होंने अपने राज्य की दक्षिणी सीमा बढ़ाकर ब्रिटिश भारत की उत्तरी सीमा से मिला दी। सीमा सामीप्य के कारण 1814–15 ई0 में नेपाल और अंग्रेजों में युद्ध हुआ। इस गोरखा युद्ध के उपरान्त दोनों पक्षों में सुगौली की संधि हुई, जिसके अनुसार नेपाल ने अपने राज्य के कुछ भू–भाग ब्रिटिश सरकार को दे दिया। संधि की एक धारा के अनुसार नेपाल की वैदेशिक नीति भारत की ब्रिटिश सरकार के द्वारा नियंत्रित होती रही। इसी प्रकार कुछ प्रतिबन्ध के साथ नेपाल स्वतंत्र देश बना रहा। नेपाल के बहुसंख्यक लोग हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं और अल्पसंख्यक लोग बौद्ध धर्म के विकृत रूप के अनुयायी है। नेपाल में संस्कृत के बहुत से हस्तलिखित महत्वपूर्ण ग्रंथ उपलब्ध है।

विशिष्ट अतिथि प्रो0 जे0एन0 पाण्डेय ने कहा कि भौगोलिक विरासत के ये दोनों देश एक–दूसरे के पूरक है।

प्रो0 हर्ष कुमार सिन्हा ने कहा कि भारत–नेपाल का सम्बन्ध पुराना है। पुराने सम्बन्धों का जिक्र करते हुए 3 बिन्दुओं की ओर ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने कहा कि 6 मिलियन नेपाली भारत में कार्य करते हैं जबकि 6 लाख भारतीय नेपाल में कार्य करते हैं। 40 प्रतिशत पर्यटक नेपाल में भारत के रास्ते जाते है जबकि भारत खुद 20 प्रतिशत पर्यटक को संभालता है। गोरखा सैनिक भारत की एक मजबूत कड़ी है। वर्तमान समय में नेपाल–चीन के समीप जा रहा है जो खतरे की निशानी है। इस पर गम्भीरता से विचार करना है। यह संयोग है कि इसी समय भारतीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज नेपाल दौरे पर है। इन बातों पर जरूर विचार होगा।

प्रो0 विनोद कुमार सिंह ने कहा कि भारत–नेपाल का सम्बन्ध आदिकाल से वर्तमान समय तक सौहार्दपूर्ण रहा है। लेकिन समय–समय पर भारत विरोधी ताकतों द्वारा दोनों देशों के मध्य मौजूद स्वस्थ सम्बन्ध को खण्डित करते रहे हैं जिसमें चीन की भागीदारी सर्वाधिक है। वर्तमान परिवेश में एक नियोजन के आधार पर काम करने की जरूरत है।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 एस0पी0एल0 श्रीवास्तव ने सभी के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि महाविद्यालय की स्वस्थ परम्परा को कायम रखते हुए संगोष्ठियों का आयोजन प्रतिवर्ष किया जा रहा है। यह इस सत्र की द्वितीय संगोष्ठी है। तीसरी संगोष्ठी का आयोजन 24–25 फरवरी को होना है। यह महाविद्यालय के लिए गर्व की बात है। कार्यक्रम संयोजक/आयोजन सचिव डॉ0 करूणेन्द्र सिंह ने कहा कि इस संगोष्ठी हेतु कुल 88 शोध पत्र प्राप्त हुए है। जिसमें से उत्कृष्ट शोध पत्रों का प्रकाशन एक संपादित पुस्तक के रूप में किया गया है। यह इसी कड़ी का अगला कदम है जो सबके लिए उपयोगी साबित होगी।